एम. एम. कॉलेज जहानाबाद।
विभाग - हिन्दी।
विषय - हिन्दी रचना पक्ष
वर्ग - स्नातक भाग-1
शिक्षण माध्यम - पाठ्य-रूप
समय - 11 बजे से 12 बजे तक 20.7.2020
शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा
पाठ - लोकोक्तियाँ या कहावतें।

प्रिय छात्र-छात्राऐं।

लोकोक्तियों से तात्पर्य लोक जीवन में रूढ़ हो चुकी लोक उक्तियों से है। मुहावरे की तरह ही लोकोक्तियों को वाक्य में प्रयोग कर अर्थ स्पष्ट करना होता है। दरअसल ये लोकोक्तियाँ गाँवों में या जनसमुदाय में आसानी से प्रयोग में लाए जाते हैं। सामान्यतः लोकोक्तियों के अर्थ तो ज्ञात होते रहते हैं पर वाक्य में इनका प्रयोग मुश्किल हो जाता है। ध्यातव्य बातें यह भी यहाँ वाक्य संरचना ऐसी होती है कि लगभग दो तीन पंक्तियों में इसका अर्थ स्पष्ट हो सकता है।

उदाहरणार्थ — 'घर की मुर्गी दाल बराबर' — अपनी चीजों या व्यक्तियों को सामर्थ्य, क्षमता और प्रतिभा रहने के बावजूद कम महत्त्व देना। अब इस लोकोक्ति को वाक्य में प्रयोग द्वारा अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया जाता है — 'सोहन हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होता आया है।

पर, उसकी माँ उसे [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] कहा जाता है घर की मुर्गी दाल बराबर।'

यहाँ मैं स्पष्ट करना जरूरी समझता हूँ कि मुहावरे तथा लोकोक्तियों में काफी अन्तर है। मुहावरा वाक्यांश है इसका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता, वरन इसका प्रयोग वाक्य के अन्तर्गत ही किया जाता है। सभी मुहावरे से लाक्षणिक अर्थ की अभिव्यक्ति संभव हो पाती है। मुहावरे पर चर्चा के क्रम में लाक्षणिक अर्थ के अभिव्यक्ति की बात की गई है।

इसके विपरीत लोकोक्ति सम्पूर्ण वाक्य होती है, और उसका प्रयोग स्वतंत्र रूप में होता है। इसके अतिरिक्त लोकोक्ति का प्रयोग किसी घटना विशेष पर किया जाता है। जिससे किसी फल की प्राप्ति होती है। यह उदाहरण या समता स्थापित करने के लिए भी प्रयुक्त की जाती है। मुहावरे में लाक्षणिक प्रयोग होते हैं किन्तु कहावतें किसी कथा या फिर सत्य पर आधारित होती है।

जैसे:- लोकोक्ति — 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

अर्थ — अकेला व्यक्ति सीमित कार्य ही कर सकता है।

अब इसका प्रयोग देखिए —

'बीस आदमियों के परिवार का भरण-पोषण श्याम के द्वारा अकेले सम्भाल लेना उसके वश की बात नहीं है। ठीक ही कहा गया है — अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

2. अधजल गगरी छलकत जाय' — अर्थ — कम साधन वाले व्यक्ति अधिक प्रदर्शन करते हैं अथवा अपने आपको अधिक दिखाने का प्रयत्न करते हैं।

वाक्य में प्रयोग — मोहन को बैंक में नौकरी क्या मिल गई वह तो कोठी, [illegible] और हवाई जहाज की बातें करने लगा है। ऐसे ही लोगों के लिए कहा गया है —

'अधजल गगरी छलकत जाय।'

(मेधा ...) [signature] ...7.20